International Journal of Web of Multidisciplinary Studies
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
website: *http://ijwos.com* OPEN ACCESS **E-ISSN : 3049-2424**
Volume.03 Issue.01.
DOI: https://doi.org/10.71366/ijwos03012641753

शीर्षक: स्वयं प्रकाश के कथा-साहित्य में औद्योगिक यांत्रिकता और श्रमिक चेतना का विश्लेषण।

नंद किशोर बरार[1], डॉ. अजय कुमार चौधरी[2]
[1] शोधार्थी- महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर, शोध केंद्र बीना, सागर (म. प्र.)
[2] शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय, खुरई, सागर (म. प्र.)

Article Info

Article History:

Published:30 Jan 2026

Publication Issue:
Volume 3, Issue 01
January-2026

Page Number:
614-618

Corresponding Author:
नंद किशोर बरार

Abstract:
यह शोध पत्र समकालीन हिंदी कथा-साहित्य के प्रमुख लेखक स्वयं प्रकाश के साहित्य में वर्णित'औद्योगिक परिवेश' व्यापक पहलुओ का सूक्ष्म अध्ययन है। आज के समय में तकनीक और मशीनों को विकास का मुख्य आधार माना जाता है, परंतु स्वयं प्रकाश का साहित्य उस चमक-धमक के पीछे छिपे श्रमिक वर्ग के संघर्ष, उनकी पीड़ा और उनकी 'मानसिक यांत्रिकता' को दुनिया के सामने लाता है। यह शोध इस महत्वपूर्ण तथ्य उजागर करता है, कि कैसे निरंतर बढ़ते मशीनीकरण ने एक हाड़-मांस के इंसान को मशीन के एक 'बेजान पुर्जे' में बदल दिया है। इस शोध का उद्देश्य उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'ईंधन' और चयनित कहानियों के माध्यम से यह समझना है कि पूँजीवादी व्यवस्था के शोषण के विरुद्ध एक मजदूर के भीतर 'श्रमिक चेतना' किस प्रकार जागृत होती है। यह शोध पत्र इंसान और मशीनों के बीच की होड़ ' के उस द्वंद्व को दर्शाता है जिसमें मनुष्य अपनी संवेदनाएँ खोता जा रहा है।
Keywords: स्वयं प्रकाश, औद्योगिक परिवेश, श्रमिक चेतना, ईंधन, विस्थापन, यांत्रिकता, मानवीय संवेदना, पूँजीवाद।

1. प्रस्तावना (Introduction)

हिंदी साहित्य में जब भी मध्यमवर्ग और मजदूर वर्ग के अंतर्संबंधों की बात होती है, तो स्वयं प्रकाश का नाम सबसे पहले आता है। उन्होंने केवल किताबों में पढ़कर मजदूरों के बारे में नहीं लिखा, बल्कि उन्होंने स्वयं भिलाई जैसे बड़े औद्योगिक शहरों में अपना जीवन जिया है । उन्होंने अपनी आँखों से विशाल भट्टियों में लोहे को पिघलते और उन मशीनों के बीच इंसानी संवेदनाओं को दम तोड़ते हुये देखा है। यही कारण है कि उनके साहित्य में जो 'मजदूर' है, वह बहुत वास्तविक और जीता-जागता लगता है।

आज हम जिस युग में जी रहे हैं, उसे 'बाजारवाद' का युग कहा जाता है। हर तरफ विकास की चर्चा है, बड़ी-बड़ी चिमनियाँ और कारखाने प्रगति का गौरव माने जाते हैं। लेकिन स्वयं प्रकाश का साहित्य हमें उन चिमनियों के नीचे दबे हुए उस साधारण मजदूर की जिंदगी की हकीकत दिखाता है, जो दुनिया के लिए तो केवल एक 'मजदूर' ही है, जिसके भीतर भी एक पूरा संसार बसता है। वे यह गंभीर सवाल उठाते हैं कि क्या ये मशीनें इंसान की सुविधा के लिए बनाई गई थीं, या आज इंसान को ही इन मशीनों की वेदी पर 'ईंधन' बनाकर चढ़ाया जा रहा है, उनकी रचनाएँ उस 'अदृश्य मजदूर' की चीख हैं जो मशीनों के शोर में दबा दी जाती है। इस प्रस्तावना का मुख्य उद्देश्य उस पृष्ठभूमि को समझना है जिसमें एक लेखक अपने समय के सबसे बड़े सच को दिखाता है।

Copyright © 2025 The Author(s) : This is an open access article under the CC BY license (http://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/)

2. ईंधन' उपन्यास: विस्थापन और शोषण का विस्तृत दस्तावेज

- **'ईंधन' उपन्यास** आपके शोध का केंद्रीय आधार है,और यह एक बड़े क्षेत्र पर फैला हुआ है। यह उपन्यास दिखाता है कि कैसे एक छोटा और शांत कस्बा जब 'औद्योगिक नगर' बनता है, तो वह वहाँ के निवासियों के लिए खुशहाली नहीं बल्कि तबाही लेकर आता है।
- **विस्थापन का दर्द** : विकास के नाम पर जब बड़ी परियोजनाएँ (जैसे उपन्यास में 'इस्कॉन') किसी क्षेत्र में आती हैं, तो वे केवल जमीन का टुकड़ा नहीं लेतीं, बल्कि हजारों सालों से चली आ रही एक संस्कृति, एक पहचान और लोगों की जड़ों को हमेशा के लिए उखाड़ देती हैं। वह किसान, जो कल तक अपनी जमीन का राजा था और अपनी मर्जी से खेती करता था, जमीन छिन जाने के बाद उसी जमीन पर बनी फैक्ट्री के गेट पर एक लाचार 'दिहाड़ी मजदूर' बनकर खड़ा हो जाता है। यह विस्थापन केवल घर बदलना नहीं है, बल्कि यह अपने आत्म-सम्मान को खो देने की दुखद दास्तां है।
- **मजदूर का 'ईंधन' के रूप में परिवर्तन :** उपन्यास का नाम 'ईंधन' एक बहुत बड़ा व्यंग्य के रूप मे अर्थ है। जैसे किसी इंजन को चलाने के लिए कोयले को जलाया जाता है और वह जलकर राख हो जाता है, ठीक वैसे ही पूँजीवादी लोग अपनी फैक्ट्रियों का मुनाफा बढ़ाने के लिए मजदूर के खून, पसीने और उसकी पूरी जवानी को 'ईंधन' की तरह इस्तेमाल करते हैं। स्वयं प्रकाश यहाँ यह स्पष्ट करते हैं कि फैक्ट्री के मालिकों के लिए मजदूर एक 'इंसान' नहीं, बल्कि 'खपत की वस्तु' है। जब तक मजदूर के शरीर में ताकत है, तब तक उसे निचोड़ा जाता है, और बीमार होते ही उसे फेंक दिया जाता है।
- **मानसिक जड़ता और अकेलेपन का चित्रण:** स्वयं प्रकाश यहाँ दिखाते हैं कि फैक्ट्री का कठोर अनुशासन मजदूर के निजी जीवन को पूरी तरह सोख लेता है। आठ-आठ घंटे की शिफ्टों में काम करने के बाद जब मजदूर घर लौटता है, तो वह इतना थक चुका होता है कि उसके पास न तो अपने बच्चों से बात करने की ताकत बचती है और न ही अपनी पत्नी के साथ बैठने की ऊर्जा। वह समाज से कट जाता है। उसका जीवन एक 'टाइम टेबल' की जंजीरों में बंध जाता है। वह केवल एक 'नंबर' बनकर रह जाता है, जिसका अपना कोई चेहरा नहीं होता।

3. स्वयं प्रकाश की कहानियों में श्रमिक चेतना का उदय और संघर्ष:

स्वयं प्रकाश केवल मजदूरों का दुख नहीं दिखाते, बल्कि वे उस व्यवस्था के खिलाफ 'बदले की भावना ' की बात भी करते हैं। उनकी कहानियों में मजदूर जागरूक दिखाया गया है, वह अपना अच्छा बुरा समझता है ।

- **सूरज कब निकलेगा —** इस कहानी मे एकजुटता की शक्ति को दिखया गया है , यह कहानी श्रमिक आंदोलनों का एक साक्षात उदाहरण है। इसमें दिखाया गया है कि जब शोषण अपनी सीमा पार कर जाता है, तो मजदूर अकेले लड़ने के बजाय 'सामूहिक शक्ति' का सहारा लेता है। वह समझ जाता है कि अगर वह अकेला रहेगा तो दबा दिया जाएगा, लेकिन अगर वह 'यूनियन' या 'समूह' में रहेगा तो वह बड़े से बड़े मालिक को झुका सकता है। 'सूरज' यहाँ केवल एक तारा नहीं है, बल्कि वह आने वाले बेहतर भविष्य और मजदूरों की जीत का प्रतीक है।

- **मात्रा और भार —** इस कहानी मे संस्कृति पर गहरी चोट की है, यह कहानी आज के समय के 'वर्क-स्ट्रेस' की बहुत पुरानी लेकिन सच्ची व्याख्या है। इस कहानी मे नायक उत्पादन की 'मात्रा' बढ़ाने के दबाव में इतना दब जाता है कि वह मानसिक रूप से बीमार होने लगता है। काम का बोझ उसके दिमाग पर एक 'भारी वजन' की तरह लदा रहता है। यहाँ लेखक यह सवाल करते हैं कि क्या अधिक माल बनाना ही विकास है, क्या इंसान की शांति की कोई कीमत नहीं है, यह कहानी औद्योगिक परिवेश के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को बहुत गहराई से चित्रित करती है।
- **आदमी जात का आदमी —** इस कहानी मे वर्ग चेतना का विकास यह कहानी समाज मे बदलाव की एक बड़ी मिसाल है। कारखाने के भीतर अलग-अलग जातियों और धर्मों के लोग साथ काम करते हैं। यहाँ ऊँच-नीच की पुरानी दीवारें मिट जाती हैं क्योंकि सबकी समस्या एक ही है—'शोषण'। यहाँ एक नई पहचान का उदय होता है, जिसे हम 'श्रमिक वर्ग' कहते हैं। यह कहानी दिखाती है कि कैसे काम का दबाव लोगों को अपनी घटिया सोच से बाहर निकालकर एक इंसान के रूप में खड़ा करता है।

4. औद्योगिक परिवेश में 'समय' की गुलामी और अनुशासन:

औद्योगिक सभ्यता में 'समय' इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन बन गया है। स्वयं प्रकाश के साहित्य में 'सायरन' की आवाज किसी जेल की घंटी की तरह लगती है। जैसे ही सायरन बजता है, मजदूर की सारी आजादी खत्म हो जाती है। उसे मशीनों की रफ़्तार के साथ भागना पड़ता है। स्वयं प्रकाश ने दिखाया है कि फैक्ट्री का यह अनुशासन मजदूर के 'जैविक समय' (Biological Time) को पूरी तरह बिगाड़ देता है। उसका खाना, उसका सोना और उसका उठना, सब कुछ फैक्ट्री तय करती है। यह 'यांत्रिकता' इंसान को भीतर से खोखला कर देती है। वह एक ऐसा कलपुर्जा बन जाता है जो तब तक चलता है जब तक उसमें तेल (श्रम) है। यह समय की गुलामी आधुनिक युग का सबसे बड़ा और कड़वा सत्य है।

5. मशीनी सभ्यता मे मानवीय संवेदना:

स्वयं प्रकाश का मानना है कि मशीनें कितनी भी 'स्मार्ट' या उन्नत हो जाएँ, वे कभी भी मानवीय संवेदनाओं, प्रेम और करुणा का स्थान नहीं ले सकतीं। कारखानों में काम करते हुए मजदूरों के बीच पहले जो 'भाईचारा' होता था, उसे आज के दौर के पूँजीवाद ने कठोर प्रतिस्पर्धा (Competition) में बदल दिया है। आज एक मजदूर दूसरे मजदूर को अपना साथी नहीं, बल्कि एक विरोधी समझने लगा है। स्वयं प्रकाश अपने पात्रों के माध्यम से पाठकों को बार-बार यह याद दिलाते हैं कि मशीन के साथ रहते-रहते हमें स्वयं को मशीन होने से बचाना होगा। वे कला, संगीत और साहित्य को वह माध्यम मानते हैं जो एक मजदूर को उसके 'इंसान' होने का अहसास दिलाते रहते हैं।

6. विस्थापन से सामाजिक और सांस्कृतिक पर प्रभाव:

जब हम विस्थापन की बात करते हैं, तो वह केवल घर बदलने तक सीमित नहीं होता। स्वयं प्रकाश दिखाते हैं कि विस्थापन के साथ-साथ एक पूरी 'सांस्कृतिक विरासत' नष्ट हो जाती है। गाँव के मेले, लोकगीत, सामुदायिक मेल-जोल, ये सब कारखानों के कंक्रीट के नीचे दब जाते हैं। लोग अपनी पहचान खो देते हैं। विशेषकर बच्चों और बुजुर्गों पर इसका बहुत

बुरा प्रभाव पड़ता है। बुजुर्ग अपनी पुरानी यादों में घुटते हैं और बच्चे उस मशीनी वातावरण में पलकर बड़े होते हैं जहाँ संवेदनाओं की कमी है। यह सांस्कृतिक विस्थापन समाज को जड़हीन बना देता है।

7. नारी दृष्टि और श्रमिक परिवार:

स्वयं प्रकाश के साहित्य में औद्योगिक प्रभाव केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है। वे उन महिलाओं का भी जिक्र करते हैं जो इस व्यवस्था की सबसे बड़ी शिकार हैं। 'ईंधन' उपन्यास में औरतों की स्थिति दिखाती है कि कैसे जब पुरुष मजदूर विस्थापन और फैक्ट्री के शोषण से दुखी होता है, तो वह घर जाकर अपना गुस्सा अपनी पत्नी पर निकालता है। नशे की लत और घरेलू हिंसा इसी मशीनी सभ्यता की देन है। घर की औरतें न केवल आर्थिक तंगी झेलती हैं, बल्कि वे उस मानसिक तनाव को भी झेलती हैं जो फैक्ट्री से घर तक पहुँचता है। यह शोध का एक महत्वपूर्ण सामाजिक और नारीवादी पक्ष है जिसे लेखक ने बहुत संवेदनशीलता से उठाया है।

8. तुलनात्मक अध्ययन: प्रेमचंद और स्वयं प्रकाश का मजदूर:

इस शोध पत्र को और अधिक वजन देने के लिए यह तुलना जरूरी है। मुंशी प्रेमचंद का मजदूर (जैसे 'गोदान' का होरी) मुख्य रूप से सामंती व्यवस्था, जमींदारों और महाजनों से लड़ रहा था। उसका संघर्ष खेत और खलिहान का था। लेकिन स्वयं प्रकाश स्वयं प्रकाश ने दिखाया है कि आज का मज़दूर पूँजीवादी व्यवस्था और ग्लोबल कंपनियों के जाल में फँसा है जिसे वह देख भी नहीं सकता। आज का शोषण डिजिटल हो गया है। स्वयं प्रकाश का मजदूर प्रेमचंद के मजदूर के मुकाबले अधिक जागरूक है, क्योंकि वह अपनी शक्ति को पहचानता है और वह समझता है कि उसे किसी एक मालिक से नहीं बल्कि पूरी 'व्यवस्था' से लड़ना है। यह जागरूकता ही उसे आधुनिक बनाती है।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

आज के दौर में जब सब कुछ प्राइवेट हो रहा है और हर तरफ बाजार और पैसे की होड़ मची हुई है, तब स्वयं प्रकाश की कहानियाँ और भी ज़रूरी हो गई हैं। वे हमें सचेत करते हैं कि तरक्की के चक्कर में हमें अपनी इंसानियत नहीं खोनी चाहिए, हमे हमेशा विनम्र रहना चाहिए, एक दूसरों का दर्द समझना चाहिए, सामने वाले को क्या परेशानी हो रही है या क्या परेशानी हो सकती है हमे उस बारे मे भी सोचना चाहिए और हमे हमेशा दूसरों की मदद के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

वे अपनी कहानियों में मजदूरों को बेचारा या लाचार नहीं दिखाते, बल्कि उन्हें समाज को बनाने वाला और समझदार मनुष्य समझते हैं।

एक रिसर्च करने वाले (शोधार्थी) के तौर पर हम यह कह सकते हैं कि उनका लेखन मशीनों के शोर में खोती जा रही इंसानी भावनाओं को बचाने कस लिए बहुत ही उत्तम प्रयास है। वे हमें सिखाते हैं कि असली तरक्की बड़ी-बड़ी मशीनों, बड़ी बड़ी गाड़ी बांग्ला, व घर से नहीं, बल्कि एक अच्छा इंसान बनने और इंसान की खुशी उसकी इज्जत से नापी जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. स्वयं प्रकाश- ईंधन (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. स्वयं प्रकाश- सूरज कब निकलेगा (कहानी संग्रह), सामायिक प्रकाशन।
3. स्वयं प्रकाश- मात्रा और भार, राजकमल प्रकाशन।
4. नामवर सिंह- कहानी: नयी कहानी, लोकभारती प्रकाशन।
5. मैनेजर पाण्डेय- साहित्य और सामाजिक चेतना, वाणी प्रकाशन।
6. पत्रिकाएँ-आलोचना', 'तद्भव' और 'पहल' के महत्वपूर्ण अंक।
7. डिजिटल स्रोत- गद्य कोश एवं शोधगंगा (Shodhganga) वेबसाइट।